B-2
L-05
Ancient
India

सिंधु घाटी की सभ्यता

*वस्त्र : → पुरुष → लंबा कुर्ता
→ गले में गमछा (कभी-कभी कढ़ाईदार)
→ घुंघराले बाल के शौकीन

स्त्री
→ छोटा स्कर्ट
→ जूते/चप्पल * जूते एवं चप्पल के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं

शवाधान: 4 प्रकार के शवाधान
1. पूर्ण समाधिकरण
2. आंशिक समाधिकरण
3. विस्तारित समाधिकरण → सनौली
4. दाह संस्कार

लोथल: युग्म शवाधान

धार्मिक विश्वास: सैन्धव सभ्यता से प्राप्त मिट्टी की मूर्ति, पत्थर की मूर्ति, टेराकोटा, मुहर एवं मृदभाण्डों पर अंकित चित्रों से हमें धार्मिक विश्वास की जानकारी मिलती है

* मातृदेवी, पशुपति नाथ (प्रोटो शिव), लिंग पूजा, पशुपूजा, अग्निपूजा, सरीसृप पूजा, स्वास्तिक आदि के साक्ष्य मिलते हैं

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर तीन मुख वाला योगी पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठे हैं। जॉन मार्शल ने इस योगी को आद्य शिव का नाम दिया गया।

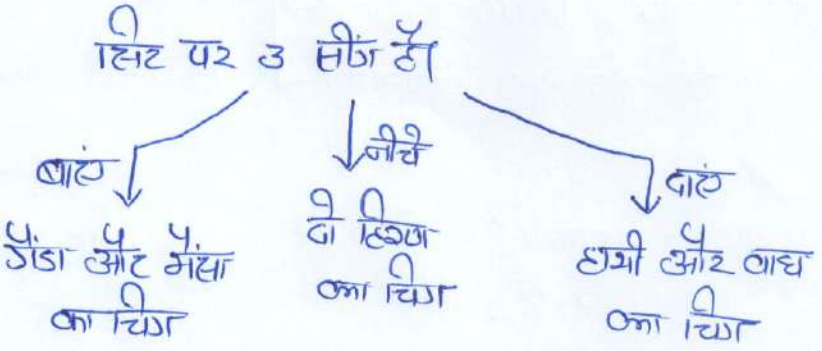

सिर पर 3 सींग हैं

- बाएं → गैंडा और भैंसा का चित्र
- नीचे → दो हिरण का चित्र
- दाएं → हाथी और बाघ का चित्र

* हड़प्पा से स्त्री की मृण्मूर्ति मिली है जिसमें स्त्री के गर्भ से पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है। यह उर्वरता की देवी को संदर्भित करता है
* लोथल से अग्नि पूजा के साक्ष्य मिले हैं।
* एकश्रृंगी वृषभ (कूबड़दार सांड) सबसे महत्वपूर्ण पशु था, जिसकी पूजा होती थी।
* हमें वृक्ष पूजा के रूप में पीपल के वृक्ष की पूजा का साक्ष्य मिलता है।
* सरीसृप की पूजा में नाग का चित्र मिलता है
* अन्य प्रतीकों के रूप में स्वास्तिक, चक्र और क्रास मिलता है। स्वास्तिक और चक्र से संभवतः सूर्यपूजा के प्रचलन का अनुमान लगाया जा सकता है।

KGS IAS

* कहीं-2 ताबीज के साक्ष्य मिलने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिंधु सभ्यता के लोग- कुछ रहस्यवादी चीजों मे विश्वास करते थे।

* इस सभ्यता में लिंग पूजा के भी साक्ष्य मिले हैं।

इस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता का धार्मिक विश्वास- इहलौकिक एवं व्यवहारिक आधिक था।

आर्थिक जीवन

* सिंधु सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित, गैर- कृषक गतिविधि, विभिन्न दस्तकार और समृद्ध आंतरिक और बाह्य व्यापार पर आधारित थी।

* हमें सैन्धव सभ्यता में कहीं पर भी फाल और हल का साक्ष्य नहीं मिलता है। इसके बावजूद हमें कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि संभवतः वहाँ लकड़ी के हलों का प्रयोग होता था।

* निम्नलिखित फसलों की पहचान की गई है। जैसे- चावल (गुजरात), गेहूं (दो किस्म), जौ (तीन किस्म) खजूर, तरबूज, मटर, सरसों तथा कपास आदि
गेहूं और जौ प्रमुख खाद्यान्न थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* चावल लोथल से प्राप्त नहीं था परन्तु लोथल एवं रंगपुर से चावल की भूसी का साक्ष्य मिला है।

व्यापार

* आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार का साक्ष्य मिलता है।

* बाह्य व्यापार का साक्ष्य

(1) साहित्यिक स्रोत : सुमेरियन साहित्य में मेलुहा का वर्णन मिलता है। इसमें बताया गया है कि व्यापारी मेलुहा के व्यापारियों से वस्तु-विनिमय करते थे। इस मेलुहा की पहचान मोहनजोदड़ो से की गई है।

हमें मागन का संदर्भ मिलता है जिसकी पहचान मकरान तट से की गई है।

(2) पुरातात्विक साक्ष्य

→ लोथल से फारस की खाड़ी के आकार की मुहर मिली है।

→ कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें मिली हैं। उस समय मेसोपोटामिया में बेलनाकार मुहरों का प्रचलन था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

आयात	निर्यात
* चांदी → अफगानिस्तान * Lapis Lazuli → अफगानिस्तान के बदख्शां प्रांत * टिन ↳ ईरान, अफगानिस्तान * तांबा ↳ बलूचिस्तान * फिरोज़ा → ईरान	* उत्पादित वस्तुएं (finished goods) * कपास * टेराकोटा मिट्टी

* आंतरिक व्यापार में तांबा राजस्थान (खेतड़ी) से, सोना दक्षिण कर्नाटक से, हरे मणि दक्षिण भारत से और सेलखड़ी गुजरात से मंगाई जाती थी

* व्यापार वस्तु विनिमय पर आधारित था।
* व्यापार के लिए मोहरों का भी उपयोग किया जाता था।
  ↳ मुहरों का महत्व व्यापारिक के साथ-2 मालिकाना हक के रूप में था।

सिंधु कला

मुहरें :

* यह मुख्यतः सेलखड़ी की बनी थी परन्तु यह अन्य पदार्थ और धातुओं की भी बनती थी

* मुहरें निम्नलिखित प्रकार की थी। जैसे-
   1. वर्गाकार : इस पर लिपि के साथ-2 पशु-पक्षियों का चित्रांकन किया गया है।
   2. आयताकार : इस पर केवल पशुओं का अंकन है।
   3. बेलनाकार :
   4. गोलाकार : → सादे हैं।
* मुहरों पर सर्वाधिक अंकन कूबड़दार एक शृंगी वृषभ का हुआ है।
* मोहनजोदड़ो से पशुपति मोहर मिली है।
* लोथल से फारस की मुहर मिली है।
* कुल मिलाकर इन मुहरों का उपयोग वाणिज्यिक उद्देश्यों के साथ-2 धार्मिक भी था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

बाट :
* तौल की इकाई के रूप में 16 का गुणज/अनुपात (जैसे- 16, 32, 64 ----) मिलता है।
  ये बाट वर्गाकार, घनाकार में।
* मोहनजोदड़ो से सीप और लोथल से हाथी दांत का स्केल प्राप्त हुआ है।
* छोटे माप के लिए दशमलव एवं बड़े माप के लिए बाइनरी प्रणाली का प्रयोग।